

१३०॥ नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ बुद्धिः क्षमिन्नुत्तमः ॥ यो कुरु
कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥
यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥
यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥
यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥
यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥
यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥
यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥ यो कुरुतां जातं श्री गुरुभ्यो नमः ॥

१३०
१३०
१३०

रूपमकमकुलयाः कथयूजायायमस्तु चार्थनंशुत ॥ ॥ धूलिधूमता ॥ ॥
दोगलाकया लवलिताशाद डोसलायाक वलीविय ॥ कायहायक ॥ ॥ ३ ॥
कचकुम्भमानवायवर्गककुलशुक्रग्रामयाश्चयथक्रुण्णुग्यागाजविभ्रम
हांजनंरुलुग हृमोमानं गहुविश्वधन ॥ कृष्णचन्द्र महाचन्द्र दवद हसमाग
गधाद कृकलाजविहस्तमन्दगीन विनायका चामूदाधाजजम्भ विहस्तीउमा
दवी एवा जयाचिविजयाचेव अजिना जयजाजिना ॥ एडकातिमहीनी
सू कातिप्रयागिनि ॥ ॥ ४ ॥ चण्डीधाजीदं ॥ ४ ॥ लम्बकीणिदलम्बजीकी
वांजीदीयिचा निन्याग्रमावस्तिन यागिनि धाजजूयामहाजूया इष्टजूया

कयालिनी कयालमासमासिन्याखदां कृयमहर्दिका ॥ खर्ज हस्कायनरुहका
वजहस्का धनूर्गथा ॥ पं क्जकिनीमहागलसर्वकामानुभासनी ॥ ४ ॥ यागमधु
लमहाजागीवजम्भजीप्रशुनथा ॥ गथागनमहाकाय ॥ ४ ॥ निलंजनयागस्कृष्टि
का ॥ ४ ॥ नृदम्बजम्भजी आहान जरावाक्ष सर्वसर्वा ॥ ४ ॥ उककवध्वन वववंध
न खख रवादनसर्वदुष्टप्रदुष्टानुहन ॥ ४ ॥ दय २ ॥ कीपूष्टिक्रू दानपन ॥
नृदकार्यसाधयहै ॥ ४ ॥ रुद्रज ४ ॥ स्वाहा ॥ ॥ वासविधिथयूजा ॥ वाकपूजा ॥
यनलिउया चानंरुदनिपिं धमूवलककमानकं पं गथा यंचगय विव
कउचूमकुलदनक विसर्जना ॥ मरूयूजा ॥ शिष्याजीवासन निलांजनव

ऊनाचासहंतायः सिरुंयुयस्वानी ॥ ॥ धनमूढमधुलस ॥ मधुलसः अविश
 नयाक ॥ ॥ रुधर्मग्रसंरुंरुहानचर्याविश्वधक ॥ समकहृदवाचाग्रंरु
 षमधुलसमूहमं ॥ अर्थ ॥ मधुलसः संयत्नंनल ॥ श्रीमत् श्रीवृद्धसगधर
 दायकायपायं अचमनंयुनिरुस्वाहा ॥ ॥ जह्वैहा ॥ ॥ धनस्वानुयक
 धिजासगय ॥ उं वृद्धमधुलसर्वविश्वानूसाजयहं ॥ स्नानवाय ॥ उं आर्यवे
 लायनायनऊयूष्यंयुनिरुस्वाहा ॥ १ ॥ दधुत ॥ उं आर्य अक्रात्यायवज
 ॥ २ ॥ काने ॥ उं आर्य बलसंरुवायवज ॥ जडासहकिं ॥ उं आर्य
 मिनाशायवज ॥ ॥ रुससःयकिं ॥ उं आर्य अमाधसिधियवज ॥ ॥ ॥ मडा

स-उ-॥ ॐ सामाकियेवज ॥ अग्नि जडा थूकूना ॥ ॐ आचनियवज ॥ १
नेमख जडा का थूकूनी ॥ ॐ पाठुला येवज ॥ ८ ॥ वायुवा अडाका थूकूनी ॥
ॐ नाजायेवज ॥ ६ ॥ ॐ आन ॥ यंचय हाचयूजा ॥ विधिवकयूजा ॥ ॥ सु
नि ॥ दृष्टाजिक्कामसद्धि केल्यभिजसंयुद्ध वचचरुलं कामकोठविषादिनर्क
दर्शने जागयचठुक्रुं ॥ माहासंख भजीकाद नभयचिहा जगंदा जूहं
प्रह्लासकवसनय ४ समिगवाचवूद्यायनसमेतम ४ ॥ ॥ यनाय ॥ मनयाय
गाथा ॥ ॐ सायिल्लाएगवान् ॥ अहं ४ सम्यक् वूधविशाचचनसंयमसगता
लाकविद नरुज यचषदम्यसा जथि साहा दवानां च मनूष्याना च वूधा

एगवान. नस्ते. वृद्धजलाय. ॥ दंपूष्यमधुलं निर्याग्यामि ॥ **॥ वारि**
 उन्नमावृद्धाय कजेनाणसिगह्योय. यजालासमधिह्यय. उलाकेमूरुय.
 सर्वसत्त्वानां. इष्टव कजकाजन. ॥ देवलि. दिव्यगंधजलमयतां उपरुं ऊ सर्व
 सत्त्वानां ॥ अनूरुजायासंम्यक्तं वीरधोप्रणिष्ठापनाय उ अस्तु गवज उरु
 हा. स्वाहा ॥ **॥ पितामहय ॥ ॥ निवृद्धयुजाविवि ॥ ॥ धनवृद्धयारु**
 साहं सर्वनामा प्रवदं भिना नय ॥ मे दिवसमूपादय ॥ यावदावाधि मधुलं निख
 धुना ॥ नाव गुरुदं एगवकमहाकाजूहिकं सर्वहं सर्वदर्शिनं. सर्ववैजिह्या
 यहं ॥ महापुत्रं अरुकायं अनूरुजकायं. सजधंगकामि. द्वियदनामग्र

म् ॥ **॥ हनाथ हगुरु. जिमिसं. थथ. गुनाम. थमनं कयाला. लाग वाधि म**
 पनामविहजखण्डमश्ल. वलानं. वृद्धयाकसजधशन ॥ वृद्धशयूगधिंल
 सा. हानसिनवान्. श्याविकाक. महाकचूधवक श्याविकाक. ॥ संपूर्वहृ
 नसियाविकाक. संपूर्वधर्मपायकनाविकाक. संपूर्वभक्तुर्वैजियाएय
 काविकाक. महापुत्रवायकाविकाक. ॥ अस्तु अस्तु नमः शुभजीव
 श्याविकाक. अनूरुजहानयासजिजश्याविकाक. निपाहृति
 याचाधि वृद्धमधुलं याविकाक ॥ थथिनकावृद्धयासजधशन
थन वनमधुलं ॥ अविहानयाक ॥ ॥ नरधर्माग्रसहं हानवयो

विष्णुधर्मः ॥ संमत्तुदवाचारः. लक्ष्मणं लक्ष्मणम् ॥ ॥ अथ संवत्सरा
य ॥ श्रीमन्मन्त्रो श्रीधर्ममन्त्रो लक्ष्मणकाययाचमनायेति कृत्वा ॥
जह्वैहो ॥ स्वां कृत्वा ॥ अथ कर्माणि ॥ नमो धर्ममन्त्रो सर्वविद्यानूना
वयं ॥ स्वां य ॥ ३ ॥ अथ यथायाचमनाय. वज्रयुष्मं प्रणि कृत्वा ॥ १
मथ ॥ ३ ॥ अथ गन्धर्वदायवज्रः ॥ २ ॥ पूर्वकान ॥ ३ ॥ अथ दन्तमिषव
जः ॥ दन्ति जगत् ॥ ३ ॥ अथ सप्तविजायायेवज्रः ॥ ४ ॥ यत्किं कुरु ॥ ३ ॥ अ
थ लंकावनायायेवज्रः ॥ ५ ॥ अथ यथायाचमनाय ॥ ३ ॥ अथ सप्तमं पूजितं कायेव
ज्रः ॥ ३ ॥ अथ यथायाचमनाय ॥ ३ ॥ अथ नथागतं पुष्पकायवज्रः ॥ १ ॥ नि

अथ जगत्पूजितं ॥ ३ ॥ अथ लंकावनायायेवज्रः ॥ ४ ॥ वायुवज्रः ॥ जग
त्पूजितं ॥ ३ ॥ अथ सर्वं कुरु ॥ अथ वायुवज्रः ॥ ४ ॥ ॥ अथ नथागतं पुष्पकायवज्रः ॥ १ ॥
कान ॥ ॥ पक्ष्मप्रहायपूजा ॥ विष्णुपूजा ॥ मुनि ॥ यागाद्यादिकं ॥ ४ ॥ स्व
कमहर्णाचक्रयंत्रपाणीनां. यत्किं कुरु ॥ जगत्पूजितं. जह्वैहो. सप्त ॥ सप्तमं कुरु
नि ॥ अथ नथागतं पुष्पकायवज्रः ॥ ४ ॥ अथ सप्तमं पूजितं कायेवज्रः ॥ ४ ॥
नायमहर्णाचक्रयंत्रपाणीनां. यत्किं कुरु ॥ जगत्पूजितं. जह्वैहो. सप्त ॥ सप्तमं कुरु
धर्ममन्त्रो गजयुवदिन. ॥ नमो धर्ममन्त्रो सर्वविद्यानूना
य. ॥ अथ यथायाचमनाय ॥ ३ ॥ अथ नथागतं पुष्पकायवज्रः ॥ ४ ॥
वज्र ॥ अथ यथायाचमनाय ॥ ३ ॥

विष्णुमहादेव महातीक्ष्णजल. यंकज यूष्महस्तु वृद्धं वस्त्रियं चमनं. उंज
जिप्रविचूरप्रसूवर्द्धदीक्षल २मं च वद्धदीक्षिचि २ वृद्धिवर्द्ध दीखाहा ॥
पिजासक्तय ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॥ **धनधर्मयाखकन ॥** सा हं सर्वं न मा
नुवर्द्धमिना. कयं ॐ मदीवसमुपादाय ॥ यावदावाधिमराद्वनिखंछना
नावधर्मसजहंगकामि ॥ धर्मयुहायाजमिनाहि च. विजागानामग्रमः उ
द्युननी. हानचूप ॥ नृणां धर्मसजहंगकामि ॥ ॥ **हनाथ हस्तु**
नृजिमिस्तथथुनाम. थमनेकयागी ॥ ॥ **हानवाधिमराद्वनिखंछना**
न. खस्तुमस्तुगलनं धर्मयाक सजहंगन ॥ धर्मयुगधिंक्रासाय

सूयाजमिना धर्मयाविकाकक्र. जागद्व. मायामाहर्नथिय मरुत्तम
जीजश्याविकाकक्र. कथागनयिनिमाश्याविकाकक्र. हानचूपश्या
विकाकक्र. थर्थिक धर्मजलयाक सजहंगन ॥ ॥ **धनसंपदमस्तु**
मस्तु अविद्वान ॥ ॥ **नमो धर्मगुप्तं हनचय्याविष्णु धर्मसमस्त**
इनावाजागुलायमस्तु मस्तु ॥ ॥ **अर्थसंपदमस्तु मस्तु हाय ॥ श्री**
मस्तु श्रीसंपदमस्तु. एहाजकाश्याया चमधार्थप्रतिक्रिस्वाहा ॥
उद्धवहा ॥ ॥ **हानवाधिमराद्वनिखंछना** ॥ **उं मधमस्तु**
सर्वविद्यानस्तु जयहं ॥ ॥ **हानवाय ॥** ॥ **उं शय्यावलाकि नमो नमो**

अपूर्णप्रतिष्ठाहा॥१॥ म॥ ॥ ॐ आर्यमेजीविजयायवज॥ २ पूर्व
 कोना॥ ॐ आर्यगगहगंजायवज॥ ३ दक्षि॥ ॐ आर्यसमकहदा
 यवज॥ ४ ॥ म॥ ॐ आर्यवजपानयवज॥ ५ ॐ उहखग्रम
 ॐ आर्यम॥ ६ ॐ आर्यम॥ ७ ॐ आर्यम॥ ८ ॐ आर्यम॥ ९ ॐ आर्यम॥
 दीवजघविहरीयवज॥ १० ॐ आर्यम॥ ११ ॐ आर्यम॥ १२ ॐ आर्यम॥
 हायवज॥ १३ ॐ आर्यम॥ १४ ॐ आर्यम॥ १५ ॐ आर्यम॥ १६ ॐ आर्यम॥
 खडाकाप॥ १७ ॐ आर्यम॥ १८ ॐ आर्यम॥ १९ ॐ आर्यम॥ २० ॐ आर्यम॥
 चत्वारयगियनग॥ एवसूखसूखादविहपिन॥ २१ ॐ आर्यम॥ २२ ॐ आर्यम॥

कासमचना॥ २३ ॐ आर्यम॥ २४ ॐ आर्यम॥ २५ ॐ आर्यम॥ २६ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ २७ ॐ आर्यम॥ २८ ॐ आर्यम॥ २९ ॐ आर्यम॥ ३० ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ३१ ॐ आर्यम॥ ३२ ॐ आर्यम॥ ३३ ॐ आर्यम॥ ३४ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ३५ ॐ आर्यम॥ ३६ ॐ आर्यम॥ ३७ ॐ आर्यम॥ ३८ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ३९ ॐ आर्यम॥ ४० ॐ आर्यम॥ ४१ ॐ आर्यम॥ ४२ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ४३ ॐ आर्यम॥ ४४ ॐ आर्यम॥ ४५ ॐ आर्यम॥ ४६ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ४७ ॐ आर्यम॥ ४८ ॐ आर्यम॥ ४९ ॐ आर्यम॥ ५० ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ५१ ॐ आर्यम॥ ५२ ॐ आर्यम॥ ५३ ॐ आर्यम॥ ५४ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ५५ ॐ आर्यम॥ ५६ ॐ आर्यम॥ ५७ ॐ आर्यम॥ ५८ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ५९ ॐ आर्यम॥ ६० ॐ आर्यम॥ ६१ ॐ आर्यम॥ ६२ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ६३ ॐ आर्यम॥ ६४ ॐ आर्यम॥ ६५ ॐ आर्यम॥ ६६ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ६७ ॐ आर्यम॥ ६८ ॐ आर्यम॥ ६९ ॐ आर्यम॥ ७० ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ७१ ॐ आर्यम॥ ७२ ॐ आर्यम॥ ७३ ॐ आर्यम॥ ७४ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ७५ ॐ आर्यम॥ ७६ ॐ आर्यम॥ ७७ ॐ आर्यम॥ ७८ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ७९ ॐ आर्यम॥ ८० ॐ आर्यम॥ ८१ ॐ आर्यम॥ ८२ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ८३ ॐ आर्यम॥ ८४ ॐ आर्यम॥ ८५ ॐ आर्यम॥ ८६ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ८७ ॐ आर्यम॥ ८८ ॐ आर्यम॥ ८९ ॐ आर्यम॥ ९० ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ९१ ॐ आर्यम॥ ९२ ॐ आर्यम॥ ९३ ॐ आर्यम॥ ९४ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ९५ ॐ आर्यम॥ ९६ ॐ आर्यम॥ ९७ ॐ आर्यम॥ ९८ ॐ आर्यम॥
 ॐ आर्यम॥ ९९ ॐ आर्यम॥ १०० ॐ आर्यम॥

पद्मायः अथ नानाकारिः सत्यं च न ह्यसिं नागसनायः महत्कायूति कायः ८८ ईव
हिय केरु नादि सहिर्गं गुरु २ सर्वसखाना च न नकारि इ ८ खाः इहा जय २
इध न २ समूह न २ वृद्धः सत्य नः धर्म सत्य नः संच सत्य नः सत्य वादि सत्य
नः ३ अ ४ ह ५ र ६ द ७ स्वाहा ॥ ॥ पिजा म ग य ॥ ॥ छु मि सं व न जा ॥
धन सं प या गु र क न ॥ सी हं म व ना मा न वे द मि नाः न यं ३ मं । दे व स मु या
दा य ॥ या व द वा चि म ह्य लुः नि खं ३ ना ॥ ना व न सं प स ज धं ग का मि ॥ य इ
नी र्थ वे व र्थ क वा चि ह्य व स यं ॥ सि न व र्थः छि र्ज व न क म ल ह र्थः वि ॥
स न र्थः ग ना ध म गंः सर्व स त्वा रु क य क ॥ न ना द न सं प स ज न ग क मि

हनाथ ह गु नूः जि मि सं थ थ गु ना म थ म न क या ल ल न वा चि म धु प न म
वि हा ज ख क म इ ल ॥ व ल र्गः संच ज ल या क स ज न ग नः संच ज ल श यु
ग थिं क्क थ सा ॥ अ वे व र्थि क वा चि स त्व थ य का वि का क क्कः ना यु व र्थ
श या वि का क क्कः नि का ला हा श या वि का क क्कः उ ३ अ ह य व ज द न वि याः
द ना ला हा नः प ल खं ३ ना वि का क क्कः द व ग म थ थ हा ३ या वि का क क्कः सं
व स त्व प्र नि या नः क नू ध म या वि का क क्कः ॥ थ थिं क्क संच ज ल या क स ज न ग न
थ न सि ज्ज न थ य क ॥ ज ल गु य म स ज न सर्व यु नि दि म म प ॥ अ नू मी द उ
ग नूः पू र्थः वृ द्ध वा लो द द म म ॥ स्व का न थ य क ॥ स ना क य ॥ ध न श्री ज मा य

पामराक नमस्तुते ॥ सुमि ॥ धन ॥ ॥ ॐ नमो नमस्तुते ॥ नीख
लंघय ॥ मेरी कनू मदी नाय का एव यत् ॥ ॐ समन्वाह नकुमा वृद्धा
रभ्यादि कृत्स्निना ॥ ॥ ३ ॥ नान ॥ दादा सां जान कं नय ॥ ॐ अमा यया मला
कं ममा ययी का न समुव नाथं क नू नानि मिग्धमानसं ॥ अमा यया सना मा
ना ॥ साक नाथं नमाम्यहं ॥ म ॥ नान खान नय क ॥ ॐ खराव मुद्रा ॥ सर्व धर्मा
खराव मुद्रा हं ॥ ॐ नान खान नव ज खराव नान का ॥ ॐ हं सु यं विराव ॥ रुद्रि स्थ
यं का नन ॥ विन्ध उलय म कं हि का य नि ॥ वहु म धुलं ॥ नस्या य नि डी का नन
त्यजी नाम न ॥ श्री अमा यया मला कं नय नय यत् ॥ ॥ नान ॥ मं कृ न्द व

धुहं अरु वाह विरुधिनं ॥ समुस्ति नं वि ॥ ला कं क नू नानां मिग्धमानं मं ज
राम कृटं धनं ॥ नं यं ह्या य विनं ॥ नावसं ॥ ना जारु कृटि समा य कं वज दयं क
धायिनं ॥ श्री अमा यया मला हं ॥ धन न्या स या य तु यं कं हि य क म डि उ यो ध
मूषल रसा या क म जी डी ॥ यं कं हि य क ला पीं ज क ज सा न्या स या क मा ॥ धन ॥
रुकि न हं रु ॥ धन ॥ ॐ अमा नन वदु म धुलं ॥ वाम हं रु ॥ ॐ अका नन
सूर्य मं धुलं ॥ ॐ वजा य म हं रु ॥ ॥ रुकि हं वाम आवरु नं ॥ क न य ल व द न
रुकि न ॥ ॐ कं जौ जि रे हं ॥ वाम ॥ ॐ लो मा यो नो हं ॥ ॐ अ ॥ ॐ स्वाहा ॥ वि उ ग
त्या म ॥ ॐ वज य क हं ॥ ॥ याम ध धुन ॥ ॐ अमा यया म डि ॥ सि न श्री ॥ ॐ जया

यहै॥ श्रीज॥ उं बीजयाय है॥ कं०॥ उं है स्वाहा वज्र दय है॥ हृदि॥ उं ऊय वि
जयाय है॥ नाहि॥ उं है अहय प्रदाय है॥ पादद्वयं॥ ॥ स्वतानं उं मेरी य है
मिन॥ उं क्रिणि ग है है॥ लज्जान॥ उं वज्रयादि है॥ चक्रद्वयं॥ उं स्वगर्भ है॥ स्क
द्वयं॥ उं लोक भूमी है॥ बाह॥ उं म सुपाय है॥ लीला॥ उं सर्व लोचन वि
रुक्ती है॥ हृदि॥ उं समक हृद है॥ सर्वज्ञ॥ उं उं न॥ उं है अजिनाय है॥
दोऊ नवा हा॥ उं अये जा जिनाय है॥ वामया हा॥ उं है मा ज मे न्य प्रमद ना
य है॥ मख॥ उं है अकाज म सुप्रममाय है॥ हृदि॥ उं है धन दाय है
दहि न जानू॥ उं व सुध जाय है॥ वाम जानू॥ उं अमिना लाय स्वाहाः

यहै॥ उं अमाया कल उं वं हा ॥ स्वाहा॥ धन न्या ॥ ॥ उं हृदि
रुक्ती का जन वसि मे घ्रास स्वर्य अकनिरु सुवनादि नां श्री अमाघवा
न॥ समादय अकव्य यनू॥ ॥ अकव्य॥ पादादि॥ मधुन रविदा
न॥ सर्वनाथ गना अक सर्वनाथ अक सर्वनाथ गनालयं॥ सर्वधर्मा
गुने जालाद मम धुल मरु म॥ ॥ मधुन सखान उय कं यि जा सगय
उं अमाघवा सलीकं अच मधुल सर्व विघ्न नूकादय है॥ ॥ स्वामे वा
य मधुल॥ उं अमाघवा मलीकं अच जाय जो वज्र य स्य प्रतिक स्वाहा
१॥ उं जो भुला क विजयाय वज्रपा रक्ष वज्र य स्य प्रतिक स्वाहा॥ उं माहि

यमहं वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥ ३ ॥ ~~अथ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥~~ ~~मन्त्रा ह॥~~ आहयन
 ह॥ अमितायवज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥ १ ॥ पूर्वकोत्तर॥ ॐ अमायांकुम्भ
 यवज्र॥ २ ॥ दक्षिणकोत्तर॥ ॐ नाजायवज्र॥ ३ ॥ पश्चिमकोत्तर॥ ॐ हृक्
 मिताजायवज्र॥ ४ ॥ उत्तरकोत्तर॥ ॐ सुवर्णकमायायवज्र॥ ५ ॥ अ
~~थ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥~~ ॐ अथ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥ ६ ॥ नैऋत्य
~~कोत्तरकोत्तर॥~~ ॐ एवं स नैऋत्ययवज्र॥ ७ ॥ वायव्य॥ ॐ हयग्रीवा
 यवज्र॥ ८ ॥ ~~अथ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥~~ मन्त्रा ह॥ यमप्रीति
 मीत्यं वा ~~अथ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥~~ ॐ अजितायवज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥

१ ॥ ॐ अथ अजितायवज्र॥ २ ॥ ॐ मावसेन्यपुमर्दनायवज्र॥ ३ ॥ ॐ
 वज्रदायवज्र॥ ४ ॥ ॐ अकारमृत्पुममनायवज्र॥ ५ ॥ ॐ अयायवज्र
 ॥ ६ ॥ ॐ विजयायवज्र॥ ७ ॥ ॐ अयविजयायवज्र॥ ८ ॥ ॐ वज्रदाय
 वज्र॥ ९ ॥ ॐ वसुंधरायवज्र॥ १० ॥ ॐ अथ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥ ११ ॥ ॐ अ
 नन्दायवज्र॥ १२ ॥ ॐ पुण्यकवृद्धायवज्र॥ १३ ॥ ॐ नमः॥ सुवर्ण
 हाविनादिना जाजागथागनायवज्र॥ १४ ॥ ॐ सिंदुनादविक्रीदिनजाजा
 यमथागनागनायवज्र॥ १५ ॥ ॐ नमः॥ सुप्रतिष्ठितजाजायमथागनाय
 वज्र॥ १६ ॥ ~~मन्त्रा ह॥~~ ~~अथ वज्रपूज्यं प्रतिक्रिया ह॥~~ ॐ पूज्यनाजायवज्र

पूष्यपुनिकु स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ धूपनात्राय वज्र ॥ २ ॥ ॐ दिपनात्राय वज्र
 ३ ॥ ॐ गभनात्राय वज्र ॥ ४ ॥ **ननुवाहदसदीगहाकपाह्नसखानवा**
य ॥ ५ ॥ ॐ दायसूजाधियनयवज्रपूष्यपुनिकु स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ यमायपूष्य
धियनयवज्र ॥ २ ॥ ॐ वज्रयनागाधियनयवज्र ॥ ३ ॥ ॐ कव
जाययजाधियनयवज्र ॥ ४ ॥ ॐ आल्ययगजाधीयनयवज्र ॥ ५ ॥ ॐ मि
जाक्रसाधियनयवज्र ॥ ६ ॥ ॐ वायूवपजाधियनयवज्र ॥ ७ ॥ ॐ उ
सानायरूनाधियनयवज्र ॥ ८ ॥ ॐ मम ॥ ९ ॥ ॐ विविधवपूजा ॥ १० ॥
 ॐ नमो जमाघमा लाक्क मय जाय ॥ ॐ हं कं उतु-वाचरास मे ह मं यथा

वज्रसखि नं सर्वरू विष्णु नमो रयं वज्रं श्रीपन्नजा यो नमं वामनं दिक्
 मधुलं च कमलं च दंष्ट्रारु मं पूरकं वंदहं पञ्चमं च नुमि च सा ला
 कान्कं यामय ॥ **॥ वलिपि जादी नत ॥ ॐ जमाघमा लायण लाकं दर्व्य**
क्षायमहा कामूष्णग्रचिलाय सकल योग द्वाचिदुदुखदु ॥ १ ॥ ॐ हृदयम
यसनाय ॐ देवलिदुश्चादि सहिनाय गृहिणा यरुं नुमि यो च जा
कं ॐ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥
ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥
 गवन् धन २ समयमनुमनं रु स्वाहा ॥ **ॐ जाह्नु स्वाहा ॥ ॐ जाह्नु स्वाहा ॥**

उँ वाँ ह्यर्ग हृठ क व च व रु द्या स ख स्वा हा ॥ उँ न मा र ग व र्ण अ मा प य म भ ला क
 न्ध जा य ध म सु र्ग पु व रु मि व रु ध म र्जी ॥ य वा य वा यू जा व रु का स ॥ ॥
 व रु का स न वा य क ॥ उँ न मा र ग व र्ण अ र्था व ला कि न्ध जा य वा धि स
 ला य म हा स ला य म हा का नू ति का य ॥ न य था ॥ उँ अ मा प सित म हा सित
 म रु द्ध स रु द्ध र व र्ण र व र्ण य म वि रु धि न्ध उ रु ध जा य स म का व ला कि न्ध
 न्ध जा य रु रु द्ध स्वा हा ॥ २१ ॥ वा य क यं च य हा न यू जा ॥ ॥ अ रु द्ध
 न य अ रु द्ध य म क ॥ उँ स व र्ण नि वि र्ण क न्ध य च र रु न र हा र हि र रु र्ण
 उँ का ल व रु क व न्ध न्ध च र्ण चि वि र्ण चू र्ण ग न र्ण म न र व न र्ण नि स ग स

रु द्ध पु नि म रु द्ध न्ध नि न क ल र न य र ग वा न्ध मा दि य म व चू क व
 न व रु द्ध य वि र्ण व ग र्ण न्ध नि रु च न क म ला य श्री अ मा प य म भ ला क
 न्ध च र हा च का य अ र्ध पु नि रु स्वा हा ॥ ॥ स रु द्ध यू जा ॥ य न नि य म न म
 रु द्ध र हा रु द्ध य म ॥ स नि स र्धे ४८ न्ध ना य हि रु द्ध पु नि य म ग न्ध न्ध नि
 र्ण ना य ना म रु द्ध ना ग मि स नि स र्धे ४९ न्ध ना य रु द्ध ना ग मि रु द्ध पु नि
 य न्ध ना य ना ग मि न्ध स नि स र्धे ज रु द्ध रु द्ध पु नि य न्ध ना य रु द्ध ना ग मि
 न्ध अ र्था व रु द्ध वा धि स रु द्ध ना य रु द्ध ना य रु द्ध ना य रु द्ध ना य रु द्ध ना य
 नी य अ नू रु च पू र्ण रु द्ध ना य रु द्ध ना य रु द्ध ना य रु द्ध ना य रु द्ध ना य

पूषा लव दवगि महादवगि. सामसिखि. दंडधन. महादंडधन. अयत्या
ल. ह्यैव २ न दायन दायगवमहासागज. अनव. गफमहागफ. श्रीकाकि
महाकाकि. सूत्रयमहासूत्रय. रक्षादि. महादज. सिजि २ महासिजि. हुना
गाधियगि. पनाजिकूप. आगक २ भायानाथस्यहि अर्घ्यप्रतिक्रियाहा:

नगयानगयानक गुवाकथा ॥

ह्यैव २ न दायन दायगवमहासागज. अनव. गफमहागफ. श्रीकाकि
महाकाकि. सूत्रयमहासूत्रय. रक्षादि. महादज. सिजि २ महासिजि. हुना
गाधियगि. पनाजिकूप. आगक २ भायानाथस्यहि अर्घ्यप्रतिक्रियाहा:

ममिथ्या नयेवच ॥ मधिकं लुटयानाका ॥ अदह दानयायक ॥ कजपि
पुष्पकाय ॥ प्राणनियायक ॥ कजकामिसाया कगमनयाथ ॥ काम
मिथ्यायायक ॥ ॥ थलिभजिचंयाय ॥ गुपायभागमाल ॥ ॥ मयापि
नूनयाय ॥ ह्यैव २ न दायन दायगवमहासागज. अनव. गफमहागफ. श्रीकाकि
महाकाकि. सूत्रयमहासूत्रय. रक्षादि. महादज. सिजि २ महासिजि. हुना
गाधियगि. पनाजिकूप. आगक २ भायानाथस्यहि अर्घ्यप्रतिक्रियाहा:

ॐ नमो भगवते ॥ शुद्धि चिह्नं या य शुभाय नमः ॥ ॥ शुद्धि
 दम्भं कृन्तयामा नमः धर्मं वृत्त्या नमः ॥ शुद्धि कृत्वा नमः ॥ मया नमः
 धर्मं योक्तुं नमः कृत्वा नमः ॥ नमः कृत्वा नमः ॥ अथ याको जहः ॥ ॥ ॥
 सत्त्व्याय नमः ॥ ध्याता शुचं नमः ॥ अथ दय कल ॥ ॥ ॥
 ॐ नमो भगवते नमः ॥ ॥ ॐ श्री ४ श्री मन्त्रं वृत्त्या नमः ॥ वृत्त्या नमः ॥
 मन्त्राय सत्यं नमः वृत्त्या नमः ॥ पञ्चाप विगर्भं नमः ॥ य
 धर्मं कृत्वा नमः ॥ अथ याको जहः ॥ ॥ ॥
 ॥ नमः ॥ अथ दय कल ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते ॥ शुद्धि चिह्नं या य शुभाय नमः ॥ ॥ शुद्धि
 दम्भं कृन्तयामा नमः धर्मं वृत्त्या नमः ॥ शुद्धि कृत्वा नमः ॥ मया नमः
 धर्मं योक्तुं नमः कृत्वा नमः ॥ नमः कृत्वा नमः ॥ अथ याको जहः ॥ ॥ ॥
 सत्त्व्याय नमः ॥ ध्याता शुचं नमः ॥ अथ दय कल ॥ ॥ ॥
 ॐ नमो भगवते नमः ॥ ॥ ॐ श्री ४ श्री मन्त्रं वृत्त्या नमः ॥ वृत्त्या नमः ॥
 मन्त्राय सत्यं नमः वृत्त्या नमः ॥ पञ्चाप विगर्भं नमः ॥ य
 धर्मं कृत्वा नमः ॥ अथ याको जहः ॥ ॥ ॥
 ॥ नमः ॥ अथ दय कल ॥ ॥ ॥

बहिगगलकाह. उँ हादीयंक। वकवह २३ वृगं खं स्वाहा ॥ गग ॥ उँ वन
२ ववदाकयक हृह ॥ १ नेवयं स्वाहा ॥ नेवय ॥ वजयूय स्वाहा ॥ ॥
उँ अकाह मूरव्यादि ॥ वसि ॥ वजय ऊई ॥ ॥ स्नानमजऊई ॥ याग
मचऊई ॥ आसोनमचऊई ॥ रावना ॥ गगास्वददय अकावेधचनु
मंलुलं नदयविजी कावतजनिविस्वचिनंद अदिगलाक आहुंगवा
अमाचया नलाकं न्यचप्रगिराव्य ॥ गंदसिमहावद्यपून ४ उँ गग
जनिविस्वचनं सखावर्गिलाक आहुंगवा. अमाचया नलाकं न्यचप्र
गिराव्य ॥ गंदसिमहावद्यमानियहका ॥ ॥ उँ ववदाय स्वाहा ॥

उँ सवरेह २२ गगवनध २२ समय. सवहं ह स्वाहा ॥ उँ अमाचया नला
कं न्यचप्रवेनसस्का वायपायं प्रगिरा स्वाहा ॥ अर्थ अचमनं प्रगिरा
स्वाहा ॥ उँ ऊई वंश ॥ पूष्या नम ४ तहस्वान वायं ॥ उँ अमाचया न
लाकं न्यचायवजयूय प्रगिरा स्वाहा ॥ उँ जी ॥ लाकं विजयाय अमा
चयानप्रगिराहजी स्वाहा ॥ उँ हं रुद्र स्वाहा ॥ उँ अमाचया नजी स्वाहा
न ॥ उँ अर्थ अमितालायवजयूय प्रगिरा स्वाहा ॥ ६ ॥ उँ नायायव
जयूय प्रगिरा स्वाहा ॥ खडा ॥ उँ एकनियवजयूय प्रगिरा स्वाहा ॥ ऊ
डा ॥ उँ अर्थ अमयया न्नीयू न्नायवव्यवजयूय प्रगिरा स्वाहा ॥

ऊग्रन॥ॐ सुधनकृपात्राय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ स्वशकान॥ॐ
हयग्रीवाय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ ऊग्रकान॥ धानलियिनिपूर्व
शानदक्रिष्णवर्द्धने॥ मेष्ठियवज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ॐ अर्यगग
भगंजाय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ॐ अर्यसमकृद्वाय वज्रपुष्प
प्रतिकृष्णहा॥ॐ अर्यवज्रपानय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ॐ अ
र्यमेश्वराय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ॐ अर्यसर्वविबर्द्धविक्रंति
यवज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ॐ अर्यकिनिगरीय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ॐ
अर्यस्वर्गरीय वज्रपुष्पप्रतिकृष्णहा॥ वाहपूर्वदित्ताकपाल॥ इन्द्राय

स्वाहाद्यादि॥ पंचवृत्तयूजा॥ तं. ला. च. मु॥ जीकाचसंखनाथकर
हास्त्रिस्थमानसंनर्माययाभं नामानाथलाकनार्थनमास्यहं॥
वायव्यना॥ गतामेष्टिकवृद्धमृदिनायका अशुर्वृत्तविहाजानूणवय
क॥ समकृष्णवज्रगमयदार्थस्वभवीचचदर्थप्रतिविम्बवन्विधि
सु. स्वकृद्विजकिचनेर्हसि कर्तुं नुन्यायालीनं विन्विहसमिष्टा
येॐ विलोदयद्व॥ समुद्रचलाचलद्व॥ चलठहाया॥ कमलदस्वाहा
यम॥ॐ अमगोलाय स्वाहा॥ॐ वाचिचिगन्दियगर्ग॥ॐ आलिकालि
स्वणवसूर्यचन्द्रसूर्यसूर्यपूटमुशुजीकाचसमस्यनयमगदीजा

विशिष्टं पंचमं नक्रमं धारुगवतं अमाद्यया मलाकं च जंवि न्महापवि
समयदक्षिणं सर्वो गुरुत्वं एकमस्वेनया विवक्ष्य च न्महापवि
अथ वचदाया मलाकं च जंवि न्महापवि ददयूक क पशक मं उल्लुचवं
ऊयमकुटिर्न अमिता रुकु न स म जं हा वयना ॥ हगवं का सवना जासा
मवर्द्धिदिरुजादक्रि हवचदा काम नी लोयल चेना सर्वो लं का चरु पि
मावमह कुटिपी नवर्द्ध च वरुडा दक्रि ह प्रथम सु ऊ नवजददिनी
यैरगव न नेमस्का जक नं वा म प्रथम सु ऊ नया लि जा न पूष्य च यदि
नीयन अकमाला च न्महापवि न्महापवि न्महापवि न्महापवि न्महापवि

कनया मध्वं हृषनकुमाजकनकर्गो चवर्द्ध कवयूडां जलियुहा
वावमिता पूरु क च न्महापवि हयग्रीवचकवर्द्धिदिरु ऊ दक्रि ह सु ऊ नरगव
नं नमस्का जक नं वा म सु ऊ नयम च न्महापवि ॥ न नावही पूर्व मे जीयपी नवर्द्ध
नागयूष्य च न्महापवि गगधगं जनिनपी नरु धर्म धज च न्महापवि न्महापवि
वर्द्ध च लनमं जयि च न्महापवि वजया लि निनपी न वरु ह क क्रि नि गर ह नी नवर्द्ध
चक च न्महापवि खगर्ही नीलवर्द्ध चक च लन च न्महापवि ॥ ॥ न ना अगन्या ॥
उजया यस्वाहा ॥ उ विजया यस्वाहा ॥ उजय विजया यस्वाहा ॥ ह्रीं श्रीं
ह्रीं ॥ शिकाया विस्वान ॥ न ना स्वहृदय अका न द च न्महापवि न्महापवि

श्रीकावचमदुर्गाविष्णुविनंदनदित्याकथाहुंगजमाद्ययाजनाकथ
 जमदगुणायसमानियंदृष्टा॥ अरिषकंयार्थयग॥ यथाहिजागमा
 धरुणापिनासर्वगतगजगजविषकसमन्विह॥ उं आवजादकाहिधिं
 चमां अरिषकंमहावजं उं अयुकंनमस्कंन ददामिसर्ववृद्धानां
 युक्तालयसंखं यूक्ताकंयुज्जनाथय मकटयं ककुलागुरुवं ॥ उं स
 र्ववृद्धचरामसिमहामकटासुस्त्रियह ॥ मकट ॥ उं वज्रवर्णं च जी अ
 रिषि कुरु ॥ उं सखवजि अरिषी कुरु ॥ उं चतुर्वजि अरिषी कुरु ॥
 उं चर्मवजि अरिषी कुरु ॥ उं कर्मवजि अरिषी कुरु ॥ उं अशारिषि

कस्तमसिवृद्धेवतारिषकगुः रुद्रकस्तर्नवृद्धलं गुरुवजसुसिधय
 वजयंछकाय ॥ उं वजाधियगिस्त्रामरिषि कुरुमि गिष्टवजसमयलं
 वजयंछ अरु ॥ यं कुरु अरिषक ॥ उं हूं उं हा उं आ ॥ अमाद्ययाजनामन
 थागनहर्तव्य ॥ उं आ ॥ अमाद्ययाजनाहं ॥ जयमकट अमिमाहकनस
 खजंरावयंन ॥ ॥ आकर्षन ॥ पाशादि ॥ यूपयानमस्तुस्त्रायाय
 यं च ययावपूजो ॥ अयाययंलायं ॥ वदिसंनय ॥ उं किं आवम
 नयुगिकस्वाहा ॥ नमो वलिरावना ॥ यजनायकावधनायमस्तु नद
 यजिचकावध अग्निमस्तु ॥ ककाचूचिक ॥ नदयचिवलिरावना

हकं ॥ वदपविदुं और्जिं खै हूँ ॥ लौ माँ पाँ नाँ वें वं जाय जात दमिष्ठि नयं चामतय ॥
बुदिय नूयें तनि काय ॥ वायु प्रविण कलि नागिनायु विहिनं वीजा कयादिकं
अति नवरा नूवर्ध इव नूयें दृष्टा ॥ अमन हनं चिं कूयं नू ॥ ॐ आ हूँ ॥ अ
कयादि निष्ठि नू ॥ ॥ पूर्ववत् वलिसुखानवायें ॥ आ. वा. य. ये. ला.
यं. नू ॥ वलिसा ला ॥ ॐ अमा चमा सुकीं ॥ सर्वदृष्टा नमय मूहाय एं ऊक
ॐ दं वलि दू ग्धादि सहि गं गृह ॥ मम सर्व सखानां च ॥ अकिं यूयं कूयं हूँ स्व
किखाहा ॥ आ चमनं प्रणि कूखाहा ॥ पं. ला. चं. नू ॥ सना ऊच ॥ अया
यादि ॥ विसुर्जन ॥ ॐ नि अमा चयानाय जाविधि समाप्त ॥ ॥ ॥

